7 चेतो चेतन निज में आवो...

चेतो चेतन निज में आवो, अन्तर आत्मा बुला रही है।।टेक।।
जग में अपना कोई नहीं है...तू तो ज्ञानानन्दमयी है।
एक बार अपने में आजा, अपनी खबर क्यों भुला दई है।।१।।

तन धन जन ये कुछ नहीं तेरे, मोह में पड़कर कहता है मेरे।
जिनवाणी को उर में धर ले, समता में तुझे सुला रही है।।२।।

निश्चय से तू सिद्ध प्रभु सम, कर्मोदय से धारे है तन।
स्याद्वाद के इस झूले में, माँ जिनवाणी झुला रही है।।३।।

मोह राग और द्वेष को छोड़ो, निज स्वभाव से नाता जोड़ो।
'ब्रह्मानन्द' जल्दी तुम चेतो, मृत्यु पंखा झुला रही है।।४।।

ज्ञायक हो ज्ञायक हो बस तुम, ज्ञाता दृष्टा बनकर जीवो।
जागो जागो अब तो चेतन, माँ जिनवाणी जगा रही है।।५।।

हे चेतन! अब जाग्रत हो जाओ और अपने स्वरूप में आ जाओ। तुम्हारी अंतर आत्मा तुम्हें आमंत्रण दे रही है।। टेक।।

इस संसार में कोई किसी का सहायक नहीं है, हितकारी तो एकमात्र अपना स्वभाव ही है और तुम स्वयं ज्ञान और आनंद स्वभावी हो। तुम बस एक बार अपने शुद्ध स्वभाव की पहचान कर लो, अपने पवित्र आत्म स्वरूप को क्यों भूल रहे हो?।।१।।

हे चेतन! इन शरीर, धन और परिजन से तेरा कोई वास्तविक संबंध नहीं है। तू मोह के कारण ही इन्हें अपना कहते हो। अतः अब तू अपने हृदय में जिनवाणी को स्थापित कर, जिससे तुझे समता रूपी आनंद की प्राप्ति होगी।।२।।

हे आत्मन्! निश्चय से तू सिद्ध प्रभु के जैसा ही है परन्तु कर्म उदय से तूने यह नश्वर शरीर प्राप्त किया है। जिनवाणी की शैली स्याद्वादमयी है और ऐसा लगता है कि मानो वह स्याद्वाद रूपी झूले से अर्थात् कथन से समस्त विवादों का नाशकर आनंद प्रदान कर रही है।।३।।

हे जीव! तुम मोह–राग–द्वेष का त्याग करो और अपने आत्मस्वरूप को जानो। अतः ब्रह्मानंद कवि कहते हैं कि हे आनंद स्वभावी आत्मा! अब तुम जल्दी जाग्रत हो जाओ क्योंकि मृत्यु का कोई भरोसा नहीं है।।४।।

हे चेतन! तुम ज्ञायक हो, मात्र जानने वाले हो इसलिये मात्र ज्ञाता दृष्टा बनकर जीवन का व्यवहार करो। माता जिनवाणी अपनी वाणी से तुम्हें जगा रही है इसलिये चेतन! अब तो जाग जाओ।।५।।